# फणीश्वरनाथ रेणु का कथा संसार

सूरज पालीवाल

# फणीश्वरनाथ रेणु

# का

# कथा-संसार

## सूरज पालीवाल

## लेखक-परिचय

**जन्म :** मधुरा जिले के बरौठ गांव में नवम्बर 8, 1951 को।

**शिक्षा :** अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ में।

**लेखन :** हिंदी कथा-साहित्य के विभिन्न पक्षों पर दो दर्जन से अधिक शोध-पत्र; **टीका-प्रधान** : कहानी-संग्रह (1985); **रचना का सामाजिक आधार** : आलोचना (1990); **फणीश्वरनाथ रेणु का कथा-संसार** : प्रस्तुत शोध-प्रबंध। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान के प्रतिनिधि कहानीकार' में चयनित कहानीकार।

**सम्प्रति :** जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर, के हिंदी विभाग में वरिष्ठ सहायक आचार्य।

# फणीश्वरनाथ रेणु का कथा-संसार

ले. डॉ. सूरज पालीवाल

## पुस्तक-परिचय

फणीश्वरनाथ रेणु प्रेमचन्द के बाद उन महत्वपूर्ण कथाकारों में हैं जिन्होंने स्वाधीन भारत के ग्रामीण जीवन के परिवर्तनों का अपने कथा-साहित्य में अत्यंत प्रामाणिक एवं कलात्मक वर्णन किया है। प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक ने रेणु के कथा-साहित्य का उनके जीवन-संघर्ष की पृष्ठभूमि में अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला है कि रेणु अपने लेखन में सबसे अधिक सार्थक तभी हुए जब उन्होंने जन-संघर्षों में भाग लिया। एक यथार्थवादी लेखक कैसे भावुक, रोमानी और अराजक चिंतन के व्यूह में फंसता गया, इसको खोजने का इस ग्रंथ में सफल प्रयास किया गया है। यह विश्वविद्यालयों के अध्यापकों, उच्चस्तरीय विद्यार्थियों एवं साहित्यकारों-सभी के लिए अत्यंत उपयोगी है।

## कुछ सम्मतियां

यह ग्रंथ हिंदी कथा-साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। साहित्य को सम्पूर्ण परिवेश में अध्ययन करने की जो वैज्ञानिक पद्धति विकसित हो रही है, उसका इसमें सही और पूरा-पूरा उपयोग किया गया है।

**- डॉ. कुंवरपाल सिंह**

प्रोफेसर, हिंदी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

प्रस्तुत ग्रंथ में अच्छी साहित्यिक, राजनीतिक तथा सामाजिक समझ के साथ फणीश्वरनाथ रेणु के रचनात्मक कृतित्व का पैना विश्लेषण किया गया है तथा सुसंगत निष्कर्ष निकाले गये हैं।

**- डॉ. शिवकुमार मिश्र**

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

सरदार पटेल विश्वविद्यालय

वल्लभ विद्यानगर, गुजरात

## प्राक्कथन

हिंदी-कथा-सृजन की विकास-परंपरा में प्रेमचन्द, यशपाल और रेणु-इन तीन नामों का एक ऐसा क्रम बनता है जिसकी पीठिका में प्रेमचन्दकालीन भारत से लेकर लगभग आठवें दशक तक के भारत का सामाजिक-राजनीतिक विकास-क्रम अंतर्निहित है। प्रेमचन्द ने 'गोदान' और 'मंगलसूत्र' तथा 'पूस की रात' और 'कफन' लिखकर हिंदी कथा-जगत को एक ठोस यथार्थपरक धरातल तथा विवेकयुक्त आलोचनात्मक दृष्टि दी थी। किंतु स्वाधीन भारत में व्यवस्था के कुचक्रों ने हिंदी कथा-साहित्य के इस विकास-क्रम को पीछे ढकेलने का प्रयास किया। लेखकीय स्तर पर एक तथा- कथित क्रांति की शुरुआत की गई जिसके अंतर्गत 'चेतन' को 'अवचेतन' में तलाशने और 'जागृति' को 'स्वप्नों' के आधार पर आंकने की एक अंतर्मुखी दिशा निर्धारित की गई। इस तथाकथित लेखकीय-क्रांति ने व्यवस्था के कुचक्रों को और प्रबल बनाया। इतिहास की धारा को विपथगामी बनाने वाले इस सुनियोजित षड़यंत्र को विफल किया यशपाल ने और उस धारा को जीवन और वास्तविकता की ओर पुन: मोड़ा रेणु ने। रेणु का कथा-साहित्य इसी ऐतिहासिक वास्तविकता का साहित्यिक दस्तावेज है।

हिंदी कथा-सृजन में यथार्थ दृष्टि की परंपरा और उसके विकास के लिये प्रयोग प्रेमचन्द-युग से प्रारम्भ हुआ। वह युग इस अर्थ-संदर्भ में ऐतिहासिक था। लेकिन वह युग इसलिये भी ऐतिहासिक था क्योंकि उस काल खड़ में जैनेन्द्र ने एक नये कथा-युग का सूत्रपात किया जिसकी नीव जेम्स ज्वॉयस, वर्जीनिया वूल्फ, डी. एच. लारेंस और फ्लावेयर के सोच पर आधारित थी। 'गबन' और 'गोदान' (प्रेमचन्द) तथा 'सुनीता' और 'त्यागपत्र ' (जैनेन्द्र) का रचना-दशक लगभग एक है। जेनेन्द्रीय प्रयोग ने अपना उत्कर्ष अज्ञेय में पाया और प्रेमचन्दीय परंपरा ने अपना विकास रेणु में अर्जित किया। दोनों परंपरायें समानान्तर विकसित हुई हैं। एक में वैयक्तिक यथार्थ का सर्वांग रूप अंकित हुआ है तो दूसरी में सामाजिक यथार्थ का संघर्ष चित्रित है। पहले की भूमि है सेक्स, अहं, भय और स्वप्न तो दूसरे का आधार है सामाजिक वैषम्य, अन्याय, उत्पीड़न और शोषण। इसीलिये पहले की परिणति या तो सूरज के सातवें घोड़े पर सवार होकर अंत: की ओर पलायन करने में हुई या फिर तंग गलियों के बन्द मकानों की अंधेरी कोटरियों में। दूसरी धारा का अवतरण या तो स्वाधीन भारत के मैले आंचल पर हुआ है या परती की

परिकथा पर। इसीलिये 'मैला ‘आंचल' और 'परती : परिकथा! का सृजनात्मक महत्व आज और अधिक बढ़ गया है। प्रेम- चन्द ने 'गोदान' के रचनाकाल तक निरंतर भारतीय गांवों के अंधकारमय पक्ष को उजागर किया, इस आशा और आकांक्षा से कि स्वाधीन भारत में यह अंधकार अवश्य मिटेगा, स्वाधीनता के प्रलोभ में ग्रामीण जीवन जगमगा  उठेगा। किंतु हुआ ठीक उलटा। आंचल का मैलापन और बढ़ गया। परती की कथा और दारुण हो उठी। रेणु ने चल के उसी मैलेपन और दारुण कथा को प्रेमचन्द की तरह, शायद उनसे भी अधिक, वास्तविक रूप में पुनर्सृजा है।

स्वाधीन भारत के गांवों की सामाजिक और राजनीतिक चेतना के संकुल और आलोचनात्मक यथार्थ का इतना बेबाक और निर्मम चित्रण अन्यत्र कहां हुआ है, यह नहीं मालूम। समाज और राजनीति की यही युग-चेतना रेणु के कथा-साहित्य की व्यावर्तक विशेषता है। मैंने इसीलिये इस ग्रंथ में रेणु की सामाजिक और राजनीतिक चेतनाओं को अध्ययन का विषय बनाया है। रेणु के कथा-साहित्य में इन्हीं दोनों चेतनाओं को केन्द्रीयता प्राप्त है। विश्वास है कि मेरा यह सारस्वत अनुष्ठान रेणु के साहित्य पर किये गये अद्यावधि अध्ययनों में एक प्रतिमान बनेगा।

इस अध्ययन-क्रम में मैंने जिन विद्वानों के विचारों का प्रत्यक्षत: या परोक्षत: उपयोग किया है, उन सबके प्रति मैं विनत हूं।

प्रस्तुत ग्रंथ मेरे शोध-प्रबंध का कुछ संशोधित रूप है, जिसे हिंदी-विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, ने पीएच. डी. उपाधि के लिये स्वीकृत किया है। यह कार्य गुरुवर प्रो. कुंवरपाल सिंह के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। सुप्रसिद्ध जनवादी कहानी लेखिका डॉ. नमितासिंह से रचना-प्रक्रिया और लेखकीय उत्तरदायित्व जैसे गम्भीर विषयों पर मार्ग-निर्देशन पाता रहा हूं। दोनों के प्रति मात्र आभार व्यक्त करके उऋण नहीं हो सकता।

प्रेस की प्रति तैयार करवाने में पत्नी शोभा ने सहयोग दिया है। उनके प्रति धन्यवाद कोरी औपचारिकता ही होगी।

जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर, के कला संकाय के अधिष्ठाता और सुहृद समाज- शास्त्री प्रो. शिवकुमार लाल, हिंदी-विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र उपाध्याय तथा प्रो. इन्दिरा जोशी एवं इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो.

श्रीराम गोयल के आत्मीय सहयोग के लिये हृदय से आभारी हूं। मेरे विभागीय सहयोगियों ने समय-समय पर जो विद्वत्-परामर्श दिया है, उसके प्रति उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हूं।

इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिए जोधपुर विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता प्रदान की है। इसके लिए मैं जोधपुर विश्वविद्यालय का आभारी हूं। लेकिन इस ग्रंथ में उल्लिखित तथ्यों, प्रतिपादित मतों एवं निकाले गये निष्कर्षों के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी हूं, जोधपुर विश्वविद्यालय नहीं।

**सूरज पालीवाल**

महाशिवरात्रि, 1990

# विषय-सूची


| | |
|---|---|
| प्राक्कथन | 4 |
| अध्याय – 1 : **जीवन परिचय और वैचारिक संघर्ष** | 9 |
| परिवेश | 10 |
| वैचारिक संघर्ष के आयाम | 12 |
| वैचारिक संघर्ष की अवस्थाएं | 20 |
| अध्याय – 2 : **पूर्ववर्ती उपन्यासों का समाज** | 24 |
| 'मैला आँचल' और 'परती: परिकथा' | 24 |
| भूस्वामियों का बढ़ता हुआ प्रभुत्व | 25 |
| नये आर्थिक और सामाजिक संबंध | 36 |
| राजनीति, जातिवाद और धर्म | 51 |
| ग्रामीण परिवेश में सरकारी कर्मचारियों की भूमिका | 66 |
| लोक संस्कृति | 71 |
| अध्याय – 3 : **परवर्ती उपन्यासों में चित्रित सामाजिक-राजनीतिक विघटन** | 73 |
| भ्रष्टाचार | 74 |
| राजनीतिक परिवेश | 84 |
| सामाजिक विघटन | 93 |
| नारी की सामाजिक स्थिति | 96 |
| अध्याय – 4 : **कहानियों का परिवेश** | 105 |
| जाति प्रथा | 107 |

| | |
|---|---|
| अंधविश्वास | 112 |
| धर्म | 117 |
| शोषण | 122 |
| नारी की सामाजिक स्थिति | 136 |
| अध्याय – 5 : **जीवन-दृष्टि** | 142 |
| लेखक की भूमिका | 145 |
| राजनीति | 150 |
| धर्म | 163 |
| स्त्री-पुरुष संबंध | 165 |
| भारतीय किसान | 168 |
| **उपसंहार** | 171 |

# अध्याय 1

## जीवन परिचय और वैचारिक संघर्ष

प्रेमचन्द ने हिंदी कथा-साहित्य को जो गरिमा, जन-जीवन की सम्पृक्ति और कलात्मकता प्रदान की वह उनकी लम्बी संघर्षपूर्ण साधना का परिणाम थी। वे चाहते थे कि कथा-साहित्य यथार्थ से अलग रहकर नकली संसार के सृजन में अपना बहु- मूल्य समय नष्ट न करे। इसीलिये वे अपने युग के स्वाधीनता आंदोलन से वैचारिक स्तर पर जुड़े और अपनी रचनाओं में सुराज की कल्पना को साकार किया।

देश के स्वतंत्रता पाने के उपरांत हिंदी लेखकों के समक्ष यह बड़ी चुनौती आई कि वे अपने साहित्य-पुरोधा प्रेमचन्द द्वारा चित्रित सुराज के आधार पर स्वाधीनता का चित्रण करें या सरकारी घोषणाओं की चकाचौंध में बहक जायें। नागार्जुन ने वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ किसान-संघर्षों में बलचनमा' की दयनीय स्थिति को देखा और स्वाधीन भारत में जमींदारों के शोषण की भयावहता को चित्रित किया। 'बलचनमा' (1952) यह घोषणा करता है कि किसान की आजादी आसमान से उतर कर नहीं आयेगी, वह इसी जमीन से पैदा होगी। नागार्जुन किसान-संघर्ष की घोषणा और उसकी अनिवार्यता सिद्ध करते हैं।

फणीश्वरनाथ रेणु अपने साहित्य-गुरु सतीनाथ भादुड़ी और द्विजदेनीजी से प्रेरणा प्राप्त कर अपने अंचल की सौंधी-महक को प्रदूषित करने वाली शक्तियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। जन-संघर्षों में सक्रिय भागीदारी, राजनीतिक प्रतिबद्धता और गम्भीर अध्ययन ने उन्हें यथार्थ साहित्य रचने को प्रेरित किया। मूलत: कवि रेणु यद्यपि कविता में भी यथार्थवादी ही रहे, तथापि उन्हें शीघ्र ही यह लगने लगा कि कविता में ज्यादा कहने का न तो अवसर है और न ही अवकाश। अत: वे कविता छोड़ कथा-साहित्य में आ गये। लेकिन कविता की भाषा और भावुकता की कैंचुली वे अंत तक नहीं उतार पाये।

रेणु को अपने अंचल और राजनीति से बेहद लगाव था। अंचल ने उन्हें अनुभव दिये, जीवनी-शक्ति दी और वह आधार दिया जिस पर उन्होंने अपने रचना-संसार के प्रासाद निर्मित किये। राजनीति ने उन्हें व्यापक दृष्टि दी, जन-जीवन को समझने की चेतना दो और जीवन-शक्ति का भण्डार दिया। रेणु के कथा-संसार का अध्ययन

करते समय इन दोनों तथ्यों को अनदेखा नहीं किया जा सकता, न ही किया जाना चाहिये। शहर में पहुंचकर भी वे गांव से मुक्त नहीं हो पाते थे, न मुक्त होना ही चाहते थे। गांव उनकी प्रेरणा का स्रोत है-एक सप्ताह भी गांव हो आता हूं तो लगता है-सूखा हुआ मन पुन: पनिया गया है, साथ ही कान, आँख और नाक-सबको नया मित्र गया है। और भी क्या सब मिलता है--सो सब तो विस्तारपूर्वक क्रमबद्ध तरीके से तो नहीं कह सकता-किन्तु गांव से कुछ-न-कुछ 'नया' लेकर आता हूं- हर बार!"[1] गांव के प्रति आस्था ही उनकी आंचलिकता को धड़कन देती है, उसमें प्राणों का संचार करती है।

राजनीति ने उन्हें चैतन्य किया। जन-संघर्षों की पीड़ा और जिजीविषा का अहसास कराया। यह प्रश्न यहां बार-बार मन में आता है कि यदि रेणु राजनीति से विमुख रहते तो क्या उनके साहित्य में वही ताजगी रहती जो अब देखने में आती ? शायद नहीं , जीवन के प्रति निकटता कितनी भी हो, जब तक उसे देखने-समझने की दृष्टि उपलब्ध नहीं है, तब तक सब व्यर्थ है। रेणु के अंचल-मोह को राजनीतिक चेतना ने व्यापकता प्रदान कर उसे संपूर्ण भारत का प्रतिनिधि बनाया। इस- लिए 'मैला आंचल', 'परती : परिकथा' या अन्य उपन्यास और कहानियों का संबंध केवल रेणु-अंचल तक ही सीमित नहीं है, वे सम्पूर्ण भारत के गांवों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अत: रेणु की जीवंतता के सूत्र राजनीति में मिलते हैं। रेणु जब-जब राज- नीति से अलग हुए, तब-तब उनमें बिखराव आया। यह तथ्य उनके कथा-साहित्य का क्रमबद्ध अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है।

## परिवेश

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म उत्तर-पूर्व-सीमांत रेल मार्ग पर सिमराहा स्टेशन से तीन मील दूर अमराइयों और हरे-भरे खेतों के मध्य स्थित औराही-हिंगना गांव में 4 मार्च, 1921 को हुआ। यह गांव पूर्रिगया जिले में पड़ता है और फारबिसगंज (जो आजकल औद्योगिक कस्बा है) से 9 माल दूर है। विराट नगर वहाँ से बहुत दूर नहीं है। पहाड़ी पगडंडियों से जाने पर दार्जिलिंग भी दूर नहीं है। मिथिला का यह छोर नेपाल और बंगाल को छूता है। रेणु

[1] रेणु,आत्म-परिचय,पृ.98